IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्य प्रदेश में इको – टूरिस्म के साथ जनजातीय संस्कृति का विकास : सतत विकास के लक्ष्यो के साथ पर्यटन का वैश्विक परिपेक्ष्य

Virendra Kole, Prachi Ambulkar
Assistant Professor, Assistant Professor
Vikrant Institute of law,
Vikrant Group of Institution Indore, India

सारांश
किसी भी देश की संस्कृति, सभ्यता, परंपराएं एवं रीति - रिवाज उस देश की महत्वपूर्ण विरासत होती है। भारत भी एक बहुल सांस्कृतिक देश है, जिसकी अपनी प्राचीन परंपराए, रीती - रिवाज तथा जीवनशैली है। इसी संस्कृति तथा जीवनशैली का एक छोटा सा भाग हमारा मध्यप्रदेश भी है। भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्य प्रदेश का दूसरा स्थान है। वहीं जनजातीय जनसंख्या के आधार पर मध्यप्रदेश का पहला स्थान है। जहाँ राज्य की जनसँख्या का लगभग 21% जनजातियां हैं। मध्य प्रदेश में भील, गोंड, कोल, सहरिया, कोरकू और बैगा जैसी 40 से अधिक जनजातियां पाई जाती हैं जिनकी अपनी संस्कृति, रीति - रिवाज, लोकगीत, चित्रकला, नृत्य आदि हैं, जैसे - पिथौरा चित्रकला, बाघ प्रिंट, कर्मा नृत्य, दहकानृत्य, भगोरिया आदि। पर्यटन की दृष्टि से अगर देखा जाए तो मध्यप्रदेश को बेस्ट टूरिज्म स्टेट ऑफ द ईयर के अवॉर्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है। मध्य प्रदेश में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों में खजुराहो, साँची, भीमबेटिका, मांडू आदि, प्राकृतिक पर्यटन स्थलों में कान्हा, बांधवगढ़ , पन्ना, पेंच आदि तथा धार्मिक पर्यटन स्थलों में उज्जैन, व ओमकारेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है, अर्थात मध्य प्रदेश में वर्ड हेरिटेज साइट्स, वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, ऐतिहासिक व धार्मिक इको-टूरिस्म क्षेत्र उपस्थित है। अतः यह कहा जा सकता है की मध्य प्रदेश इको - टूरिस्म के सभी क्षेत्रों में अव्वल स्थान रखता है।

इस शोध पत्र के माध्यम से मध्य प्रदेश में जनजातीय संस्कृति एवं इको टूरिज्म के बारे में अध्ययन किया गया है तथा सतत् विकास के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक परिपेक्ष्य में मध्य प्रदेश में पर्यटन के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों, संभावनाओं तथा उपायों के बारे में भी चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द – मध्य प्रदेश, इको – टूरिस्म, जनजाति संस्कृति व संरक्षण, लोककलाए, पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास

1.परिचय

पर्यटन केवल यात्रा या मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह किसी देश की संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं तथा संसाधनों को जानने का एक माध्यम भी है अर्थात पर्यटन किसी देश के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था को जानने तथा उसके विकास का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में देखे तो पर्यटन सभी देशों के लिए उनकी अर्थव्यवस्था के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

जवाहर लाल नेहरू के द्वारा मध्य प्रदेश को "भारत का हृदय प्रदेश" कहा गया था। जिस प्रकार हृदय शरीर के अंगों से जुड़ा हुआ होता है, उसी प्रकार मध्यप्रदेश भी भारत के कई राज्यों की संस्कृतियों से जुड़ा हुआ है। यहाँ भारत की विभिन्न जनजातिया, पर्यटन क्षेत्र, तथा सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहरें विद्यमान हैं।

मनुष्य का प्रकृति के साथ संबंध, प्राचीन परंपराओं एवं रीति - रिवाजों का निर्वाहन, सामाजिक मूल्यों का प्रकृति के साथ संबंध आदि जनजातियों संस्कृति व रीति – रिवाजो से प्रदर्शित होता है। वर्तमान समय में भी मध्यप्रदेश की अधिकांश जनजातिया पहाड़ों तथा जंगलों में निवास करती हैं अर्थात जनजातियों को प्रकृति का शिशु भी कहा जा सकता है। जिनका जीवन प्रकृति का संरक्षण, संस्कृति संरक्षण व सामुदायिक जीवन पर आधारित है।

इस प्रकार उपरोक्त का अध्ययन करने के पश्चात यह कहना उचित होगा कि जनजातीय संस्कृति तथा इको टूरिज्म का अत्यधिक गहरा संबंध है।

2.मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति

भारत में जनजातीय जनसंख्या के आधार पर मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान हैं जहाँ देश की कुल जनसँख्या का 14.70% तथा राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 21.09% आबादी जनजाति हैं जिसमें सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला धार तथा न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला भिंड है। मध्य प्रदेश में मुख्य रूप से भील, गोंड, कोल, सहरिया, बैगा, कोरकू, आगरिया. बंजारा आदि जनजातियां निवास करती हैं –

2.1.भील जनजाति

भील जनजाति मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति हैं जो मुख्यतः मध्यप्रदेश के पश्चिमी क्षेत्रों जैसे – अलीराजपुर, झाबुआ, धार, बड़वानी आदि जिलों में पायी जाती है । इस जनजाति की प्रमुख उपजातियों में भिलाला, भीली, उमड़ी, बैगास, राथियास, पटालिया आदि शामिल होते हैं । इस जनजाति की अपनी विशिष्ट संस्कृति तथा परम्पराएं हैं जो निम्न है -

- निवास – फाल्या या कू कहलाता है ।
- कृषि - भील जनजाति द्वारा की जाने वाली झूमकृषि को गजिया अथवा चिमाता कहते है ।
- पर्व - इनका प्रमुख पर्व भगोड़िया होता है जो कि गुलालिया, गोलगधेड़ो और उजाड़ियां में विभाजित होता है ।
- नृत्य - भील जनजाति का प्रमुख नृत्य तोडा, पड़वा तथा दागला हैं ।
- विवाह - इनके प्रमुख विवाहो में घर घुसनी विवाह, विनिमय विवाह, और नातरा विवाह शामिल है ।
- चित्र – भीलों की पारंपरिक चित्रकला विश्व में अत्यधिक प्रसिद्ध है जिसे **पिथौरा चित्रकला** के नाम से जाना जाता है ।

2.2.गोंड जनजाति

गोंड जनजाति भारत की सबसे बड़ी तथा मध्य प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है । इस जनजाति का विस्तार सागर, रायसेन, बैतूल, पन्ना आदि जिलों में अधिक पाया जाता है । इस जनजाति की उपजातियों में अगरिया, परधान, ओझा, सोलाहस तथा नागराचि आदि शामिल हैं । इस जनजाति की प्रमुख संस्कृति एवं परंपराएं निम्न हैं -

- पर्व – विद्की, नवाखानी, छेरता, जवारा तथा वकपंथी आदि
- नृत्य – कर्मा, भड़ोनी, सेला, सजनी, दीवानी आदि
- {गोंड जनजाति द्वारा किए जाने वाले कर्मा नृत्य को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है ।}
- विवाह – दूधलोटावा, घोटुल प्रथा, अपहरण विवाह, पोलोथर विवाह, व सेवा विवाह

इस जनजाति में किसी व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात उसके अंतिम संस्कार के समय **खहुलपाता** नामक मृत्यु गान गाने की प्रथा अत्यधिक प्रचलित है ।

2.3.बैगा जनजाति

बैगा जनजाति प्रदेश की पिछड़ी जनजातियों में से एक है । अधिकांशतः यह जनजाति मध्य प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों में पायी जाती है, जैसे - उमरिया, सीधी शहडोल, मंडला तथा डिंडौरी आदि । इस जनजाति की प्रमुख उपजातियों में नरोतियां, भरोतिया, बिझवार, नाहर और कठमैना शामिल हैं । इस जनजाति की सांस्कृतिक विशिष्टताए निम्न है –

- कृषि – बेबार, पोंडू, व दाहिया

{इस जनजाति की परंपरा अनुसार भूमि पर हल चलाना वर्जित है इसलिए इस जनजाति का कृषि का प्रमुख औजार कुल्हाड़ी माना जाता है ।}

- पर्व – अधिकांशतः हिंदुओं के पर्वो को मनाते हैं । जैसे - होली, दिवाली, राखी, दशहरा आदि ।
- नृत्य – करमा, सैला, रीना और परधोनी
- विवाह – लमसेना और उठना विवाह

बैगा जनजाति के जीवन के ऊपर प्रसिद्ध साहित्यकार **बैरियर इलविन** ने एक पुस्तक **द बैगास** नाम से लिखी है ।

2.4.कोल जनजाति

यह मुण्डा समूह की एक जनजाति है जो मध्यप्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है । यह जनजाति अधिकांशतः मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में निवास करती है । जैसे - रीवा, सतना, सीधी तथा शहडोल आदि । इस जनजाति की उपजातियो में रोतिया, रोतेले, रावत, भड़तिया आदि शामिल है । इस जनजाति की सांस्कृतिक विशिष्टता निम्न है -

- निवास – कोल्हिन टोला
- पर्व – अधिकांशतः हिंदू पर्व मनाते हैं जैसे - होली, दिवाली, राखी, दशहरा आदि ।
- नृत्य – देहका, गोरी, बधाई आदि
- विवाह – सेवा विवाह, अन्य सामान्य हिन्दू विवाह

कोल जनजाति की पंचायत को गोहिया कहा जाता है जो सामान्य मामलों में निर्णय देती है ।

2.5.सहरिया जनजाति

सहरिया जनजाति मध्य प्रदेश की उत्तरी क्षेत्रों में निवास करती है, जैसे - चंबल संभाग व ग्वालियर संभाग वाला क्षेत्र, परन्तु इस जनजाति का मूल निवास स्थान राजस्थान को माना जाता है । इस जनजाति को प्राकृतिक जड़ी - बूटियों की पहचान में महारत हासिल होती है, इसलिए इस जनजाति को औषधि प्रिय जनजाति भी कहा जाता है । यह मध्य प्रदेश की सबसे पिछड़ी तथा सर्वाधिक कुपोषित जनजातियों में से एक है । इस जनजाति के प्रमुख सांस्कृतिक विशेषताए निम्न हैं –

- निवास – सहराना
- पर्व – गोठी लीला, बाजना गीत, तथा पांडवो की कथाये
- नृत्य - लहँगा नृत्य, दुल – दुल घोड़ी
- विवाह – सेवा विवाह, अन्य सामान्य हिन्दू विवाह
- कुटुम्ब – पारिवारिक संग्रहालय

इन जनजातीय के अलावा भी मध्य प्रदेश में कोरकू, बंजारा, पनिका आदि जनजातिया भी मुख्य रूप से पाई जाती है । सरकार द्वारा इन जनजातियों के
सर्वांगीण विकास के लिए जनजातीय शोध एवं विकास संस्थान की स्थापना भोपाल में की गई है ।

जनजातियों की सांस्कृतिक विविधता जैसे - लोकगीत, लोकनृत्य, चित्रकला, पर्व तथा सामाजिक परम्पराये ही पर्यटको को आकर्षित करती है । भील जनजाति कि पिथौरा चित्रकला, गोंड जनजाति का कर्मा नृत्य, अगरिया जनजाति कि लोहकला, बेगा जनजाति कि झूम कृषि,

भारिया जनजाति का निवास स्थान पातालकोट तथा सहरिया जनजाति का दुल - दुल घोड़ी नृत्य, विश्व भर में प्रसिद्ध है, जों पर्यटन आकर्षण का प्रमुख स्त्रोत है ।

3. इको – टूरिस्म / पारिस्थितिक पर्यटन का अर्थ एवं महत्व

इको टूरिज्म से तात्पर्य उस यात्रा से है जिसमें पर्यावरण तथा प्रकृति को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाए बिना यात्रा की जाती है, तथा पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, स्थानीय समुदायों का आर्थिक विकास तथा पर्यटकों को पर्यावरण की शिक्षा प्रदान कर उनमे जागरूकता भी फैलाई जाती है ।

3.1.इको – टूरिस्म का महत्व

3.1.1. प्रकृति का संरक्षण – इको - टूरिज्म प्रकृति के संरक्षण जैसे - वन्य – जीव, पेड़ - पौधे तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ पारिस्थितिकी के विकास में भी सहायता करता है । यह सरकार तथा स्थानीय समुदायो के साथ मिलकर पर्यटकों को पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास के प्रति जागरूक करता है । जो स्थानीय समुदायो के सामाजिक व आर्थिक विकास में सहायक होता है और इससे पर्यावरण संरक्षण के लिये अभिप्रेरणा भी प्राप्त होती है ।

3.1.2. स्थायी रोजगार – पर्यटन गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय निवासियों को एक स्थायी रोजगार की भी प्राप्ति होती है, जो उनके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । जैसे – दुकान, होटल, परिवहन, गाइड, हस्तशिल, व अन्य रोजगार । इससे पर्यटकों को भी यात्रा में आसानी होती है तथा स्थानीय निवासियों के लिए आय का एक स्रोत भी उपलब्ध हो जाता है । जो दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है ।

3.1.3 संस्कृति व परम्पराओ का संरक्षण – इको - टूरिज्म के माध्यम से पर्यटक जनजातिय संस्कृति तथा परम्पराओं से अवगत होते हैं तथा उसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने के लिए इच्छुक होते है । यह प्राचीन परंपराओं एवं संस्कृति को बनाए रखने तथा उसे आगे बढ़ाने के लिए एक अभिप्रेरणा स्त्रोत के रूप में कार्य करता है । अर्थात इको - टूरिज्म जनजातीय संस्कृति तथा परम्पराओं के सतत विकास में सहायता प्रदान करता है ।

3.1.4. सतत विकास – इको - टूरिज्म का मुख्य उद्देश्य सतत विकास को बढ़ावा देना है । जहाँ पर्यावरण संरक्षण के साथ - साथ स्थानीय स्तर पर आर्थिक विकास को भी महत्व दिया गया है । जिससे पर्यटकों के लिए यात्रा सुलभ तथा सुरक्षित बन सकें और स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार भी उपलब्ध हो सकेगा

3.1.5 पर्यटन का विकास – इको - टूरिज्म जनजातीय क्षेत्रों के पर्यटन को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है, ताकि जनजातीयो की कला, संस्कृति, परम्पराए, लोकगीत, लोकनृत्य, हस्तशिल्प, आदि का संरक्षण किया जा सके तथा जनजातियो का सर्वांगीण विकास हो सके । यह सरकार और जनजातीय समुदायों के मध्य सामंजस्य बनाने का भी कार्य करता है ।

4. मध्य प्रदेश के प्रमुख इको – टूरिज्म स्थल

क्षेत्रफल की द्रष्टि से देश में सबसे अधिक वन क्षेत्र रखने वाला राज्य मध्य प्रदेश है, जहाँ राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 25% से अधिक हिस्सा वन, राष्ट्रीय उद्यानों, वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, अभयारण्य, रामसर साइट्स आदि से घिरा हुआ है । इन स्थलों में से कुछ प्रमुख इको - टूरिज्म साइट्स निम्न है –

4.1.कान्हा किशली नेशनल पार्क – कान्हा किशली राष्ट्रीय उद्यान मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा तथा पहला राष्ट्रीय उद्यान है । यह बालाघाट जिले में स्थित है । इसकी स्थापना 1955 में हुई थी तथा इसे 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत शामिल कर दिया गया था । यह राष्ट्रीय उद्यान अपनी विस्तृत जैव विविधता, सघन जंगल, वन्य-जीव संरक्षण तथा द रायल बंगाल टाइगर के लिए विश्व प्रसिद्ध है । पर्यटक यहाँ विशेषत: “बंगाल टाइगर” तथा “बारहसिंगा” अर्थात हार्ड - ग्राउंड स्वैम्प डियर को देखने के लिए आकर्षित होते है ।

4.2. बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान – मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में स्थित राष्ट्रीय उद्यान जो 32 पहाड़ियों से घिरा हुआ मध्य प्रदेश का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है । जिसकी स्थापना 1968 में की गई थी । यह अपनी सर्वाधिक बाघों की जनसंख्या, सघन वन, पहाड़ियों, बॉस के जंगलो, जंगली भेसों, हिरण, चीतल, बारासिंगा, तेंदुआ, तथा नीलगाय के लिए विश्व प्रसिद्ध है । इस राष्ट्रीय उद्यान को टाइगर रिजर्व का दर्जा भी प्राप्त है । यह राष्ट्रीय उद्यान सफ़ेद बाघों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है । वर्तमान में पर्यटकों की संख्या और सुविधा को बढ़ाने के लिए इस टाइगर रिजर्व में हवाई पट्टी का निर्माण, हॉट एयर -

बलून तथा नाईट सफारी की भी शुरुआत की गई है । इसी के साथ पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए यहाँ वन्य जीव संरक्षण कार्यक्रम तथा मोगली उत्सव भी हर साल मनाया जाता है ।

4.3. पेंच राष्ट्रीय उद्यान – यह सिवनी तथा छिंदवाड़ा जिले में स्थित है । इसकी स्थापना 1975 में हुई थी, बाद में इसे टाइगर रिजर्व घोषित कर दिया गया था । इस राष्ट्रिय उद्यान के उपर ‘रूडयार्ड किपलिंग’ ने “द जंगल बुक” नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है जो कि मोगली नामक बच्चे के जीवन के उपर आधारित है । यही कारण है कि इस राष्ट्रीय उद्यान को “मोगली लैंड” के नाम से भी जाना जाता है । यह क्षेत्र अपनी विस्तृत जैव विविधता तथा वन्यजीवों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है । इस राष्ट्रिय उद्यान में बाघ, हिरण, चीतल, भालू, नीलगाय, आदि जानवर पाए जाते है जो पर्यटकों को आकर्षित करते है । इस उद्यान का प्राकृतिक सोंदर्य फोटोग्राफारो तथा शोधार्थियो को भी अत्यधिक आकर्षित करता है ।

4.4. पंचमढ़ी – यह मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित एक हिल स्टेशन/पर्वतीय पर्यटन स्थल है । पंचमढ़ी को “सतपुड़ा की रानी” भी कहा जाता है। पंचमढ़ी अपनी प्राकृतिक सुन्दरता जैसे पर्वत, झरने, नदी, गुफाओ तथा प्राकृतिक शांति व सोंदर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है । जिससे विदेशो तक के पर्यटक आकर्षित होकर यहाँ घुमने आते है । यहा के प्रमुख भ्रमण स्थानो में पांडव गुफा, बी-फाल, धूपगढ़ चोटी, सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान आदि है । यहाँ पर्यटक विशेषकर ट्रेकिंग, नाईट सफारी, टाइगर सफारी आदि के लिए आते है, जिससे यहाँ के स्थानीय लोगो का आर्थिक विकास भी होता है ।

4.5. मांडू – मांडू मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित एक शहर है, जो ऐतिहासिक तथा संस्कृतिक पर्यटन के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है । मांडू अपने ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों, प्राकृतिक सुन्दरता, और कला के लिए प्रसिद्ध है । मांडू की ऐतिहासिकता मुग़ल काल की बाज बहादुर तथा रानी रूपमती की कहानी से भी जुड़ी हुई है । यहाँ कई ऐतिहासिक स्मारक जैसे- रानी रूपमती महल, बाज बहादुर महल, जहाज महल, हिंडोला महल, चंपा बावड़ी, हुसंग शाह का महल आदि स्थित है । वर्षा ऋतु में यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है जो पर्यटकों को अधिक आकर्षित करती है । यह इको - टूरिस, भारतीय सभ्यता व संस्कृति, और पर्यावरण संरक्षण के साथ स्थानीय आर्थिक विकास का उत्तम उदाहरण है ।

मध्य प्रदेश में इन स्थानों के अलावा भी कई इको - टूरिस्म स्थल है, जैसे – साँची, अमरकंटक, खजुराहो, भीमबेटिका आदि ।

5.**वैश्विक परिपेक्ष्य –** वर्तमान में विश्व स्तर पर इको टूरिस्म को अधिक से अधिक बड़ावा दिया जा रहा है । जिसका प्रमुख उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों, वन्यजीवों, पारिस्थितिकी, तथा स्थानीय सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देना है । यह पर्यटन को बढाने के साथ - साथ आर्थिक विकास, रोजगार, सामाजिक विकास तथा प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी फैलता है । यह वैश्विक स्तर पर सतत विकास के लक्ष्यो को प्राप्त करने का प्रयास भी करता है ।
इको-टूरिस्म का उद्देश्य केवल पर्यटकों को यात्रा या मनोरंजन करवाना नहीं बल्कि पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पारिस्थितिकी, आद्र भूमि, रामसर साइट्स, तथा अभ्यारण्यो की महत्वता को समझाना भी है, क्योकि विश्व भर में ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरण हास्, भू – स्खलन, सुनामी आदि समस्याए उत्पन्न हो रही है इन समस्याओं को केवल पर्यावरण संरक्षण व जन जागरूकता के माध्यम से ही रोका जा सकता है ।
विश्व राष्ट्र संगठन और पर्यावरण संगठन, इको – टूरिस्म को अधिक से अधिक देशो को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे है जिससे समुद्री जीवो तथा वन्य-जीवो दोनों का संरक्षण किया जा सके । भारत की प्राकृतिक विविधता, वन्यजीव अभ्यारण्य, राष्ट्रिय उद्यान (कान्हा किशली, बांधवगढ़, पेंच, पंचमढ़ी) इको – टूरिस्म के लिए भारत को एक उपर्युक्त देश बनाते है जो देश के आर्थिक विकास तथा पर्यावरण संरक्षण दोनों के लिए महत्वपूर्ण है ।

6. समस्याए

6.1. जनजातीय संस्कृति का हास् – इको – टूरिस्म की प्रमुख समस्या जनजाति संस्कृति का हास् है । जनजातीय लोग व उनकी संस्कृति वर्तमान समय में आधुनिकीकरण या पश्त्चिमी करण के प्रभाव में आ चुकी है जिसके कारण जनजातियो ने अपनी पारंपरिक संस्कृति व सभ्यता को पीछे छोड़ना शुरु कर दिया है जिससे उनके लोकगीत, लोकनृत्य, हस्तशिल्प, चित्रकला आदि धीरे – धीरे लुप्त होते जा रहे है, जिसके कारण भारत की प्राचीन जनजाति संस्कृति और परम्पराओ का हास् हुआ है । पर्यटकों के लिए यह अब उतना प्रभावी व आकर्षित नहीं रह गया है ।

6.2.औद्योगीकरण का बढ़ता प्रभाव – इको – टूरिस्म की दूसरी बड़ी समस्या औद्योगीकरण है । लगातार बढ़ते औद्योगीकरण के कारण जंगलो की कटाई व वनों का हास् हो रहा है जिससे जंगलो तथा पहाड़ो पर रहने वाली जनजातियो को अपने मूल स्थान, संस्कृति, परंपरा, आदि को छोड़कर पलायन की समस्या का सामना करना पड़ता है । इस समस्या के कारण जनजाति संस्कृति समाप्त हो रही है वही दूसरी ओर जो पर्यटक भारत की विरासत देखने के लिए आकर्षित होते थे उनकी संख्या भी घट रही है अर्थात इससे देश का आर्थिक और संस्कृतिक दोनों नुकसान साथ हो रहा है ।

6.3. प्रदुषण की समस्या – प्रकृति का हर तत्त्व जैसे – हवा, पानी, धरती व आकाश, एक – दुसरे से जुड़े हुए है । अगर किसी एक तत्त्व को नुकसान पहुचता है तो बाकि के तत्त्व भी उससे प्रभावित होते है । वर्तमान समय में लगातार प्रकृति का दोहन किया जा रहा है जिससे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, ओजन क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग, आदि समस्याए सामने आ रही है । ये समस्याए न सिर्फ प्रकृति को हानि पहुचती है बल्कि इससे मनुष्य, पर्यटन, अर्थव्यवस्था, विकास, समाज, संस्कृति आदि भी प्रभावित होता है ।

6.4. जागरूकता की कमी – इको – टूरिस्म का अधिक विकास न होने का कारण जागरूकता की कमी है । आज हर देश ज्यादा तर व्यवसायीकरण की ओर भाग रहा है जिस कारण वह न तो पर्यावरण के मानदंडो के प्रति और न ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजक है । इससे देश, उसमे रहने वाले लोगो,
समाज तथा अन्य में पर्यावरण के प्रति जागरूकता नहीं आ पाती है और लगातार पर्यावरण का हास् हो रहा है व प्राकृतिक समस्याए लगातार बढ़ती जा रही है ।

6.5. पश्त्चिमी करण का प्रभाव – इको – टूरिस्म को प्रभावित करने वाले कारणों में से एक प्रमुख कारण पश्चिमीकारण का प्रभाव भी है । लगातार बढ़ते पश्चिमी करण के कारण भारतीय संस्कृति समाप्त होती जा रही है जिससे पारम्परिक लोककलाए जैसे – लोकगीत, लोकनृत्य, लोकचित्रकला, लोकभाषा, हस्तशिल्प आदि समाज से विलुप्ति की कगार पर आ गए है । इन्ही लोक संस्कृति में से एक जनजातियो के द्वारा पर्यावरण संरक्षण भी है जो अब लगातार कम होता जा रहा है । अत: इस समस्या से पर्यावरण तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति दोनों प्रभावित हो रहे है ।

7. सुझाव

7.1.लोककलाओ का संरक्षण – इको – टूरिस्म के लगातार सतत विकास के लिए लोककलाओ का संरक्षण आवश्यक है । इसके लिए राज्य तथा स्थानीय स्तरो पर जनजातीय संस्कृति तथा सभ्यता का संरक्षण करने के लिए लोगो को जागरूक करना चाहिए । जनजातीय संस्कृति का संरक्षण जैसे – हस्तशिल्प, लोकगीत, लोकनृत्य, चित्रकला आदि को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देकर तथा लोगो को इससे जोड़कर इसे विकसित करने कार्य करना चाहिए , ताकि इसका ज्यादा से ज्यादा विस्तार हो सके जिससे यह लुप्त न हो और पर्यटको के आकर्षण और व्यक्ति के आर्थिक संरक्षण का माध्यम बन सके ।

7.2. पर्यावरण संरक्षण – पर्यावरण समस्याएं जैसे - ग्लोबल वार्मिंग, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, जल प्रदुषण आदि समस्याएं इको - टूरिज्म को लगातार प्रभावित कर रही हैं । जिसे रोकने के लिए हमें स्थानीय स्तर पर तथा सरकार की सहायता द्वारा पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों जैसे – संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व पर्यटन संघ की नीतियों को लागू करने का लगातार प्रयास करना चाहिए ताकि इको टूरिज्म के साथ – साथ वनों, जीव- जन्तुओ, और पारिस्थितिकी तंत्र को भी बचाया जा सके ।

7.3. सरकार की सहायता – इको – टूरिस्म को बढ़ावा देने के लिए सरकार को नीतिया व परियोजनाए बनानी चाहिए जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ पर्यटन का भी विकास हो सके । पर्यटन स्थानों को विकसित करने का कार्य जैसे–सडक, परिवहन, पेयजल, संचार, रहने की व्यवस्था का इन्तेजाम आदि। ये व्यवस्थाये पर्यटकों को आकर्षित करने का कार्य करेंगी । इसके आलावा सरकर को स्थानीय उद्यमियों, हस्तशिल्पियो, तथा जनजातीय संस्कृति से जुड़े लोगो की आर्थिक सहायता भी करनी चाहिए ताकि वे पर्यटन गतिविधियों में अधिक से अधिक भूमिका निभाकर इको – टूरिस्म को बढ़ा सके ।

7.4.सतत विकास की नीति – सतत विकास के लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए इको – टूरिस्म का विकसित होना अत्यंत आवश्यक है । सरकार द्वारा ऐसी नीतिया बनायीं जानी चाहिए जो पर्यावरण संरक्षण के साथ – साथ आर्थिक विकास को भी बढ़ावा दे । इन नीतियों में सर्वप्रमुख प्राथमिकता जंगलो, नदियों, जीव–जन्तुओ व पर्यावण की सुरक्षा को दी जानी चाहिए तथा द्वितीयक प्राथमिकता जनजाति संस्कृति की सुरक्षा, स्थानीय रोजगार, उद्यमता, आर्थिक विकास आदि को दिया जाना चाहिए । सरकार को पर्यटन स्थानों की सुरक्षा के लिए नियम–कानून भी बनाने चाहिए ताकि पर्यटन स्थलो का हास् न हो ।

7.5. स्थानीय भागीदारी - स्थानीय लोग अपने क्षेत्रों की गहरी जानकारी रखते हैं इसलिए इको - टूरिज्म के विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है । स्थानीय लोगों को प्राकृतिक संसाधनों, संस्कृतियो और परम्पराओ की पूर्ण समझ होती है इसलिए इनकी सहभगिता पर्यटन को सहज व आकर्षक बनती है । स्थानीय लोगों को होटल, परिवहन, गार्ड, गाइड, संचार आदि व्यवस्था से जोड़कर उनका आर्थिक विकास भी किया जा सकता है जिससे न सिर्फ पर्यटकों को सुविधाओं की प्राप्ति होगी बल्कि स्थानीय लोगों को रोजगार भी उपलब्ध होगा । जनजातीय समुदायो की लोककलाये जैसे – हस्तशिल्प, आभूषण, वस्त्र निर्माण, इत्यादि पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बन सकते हैं । इसके अतिरिक्त स्थानीय लोग पर्यावरण संरक्षण, जनभागीदारी, जनजागरूकता, सतत विकास तथा इको – टूरिस्म की प्राप्ति में विशेष भूमिका भी निभा सकते हैं ।

8.निष्कर्ष

मध्य प्रदेश एक जनजातीय संस्कृति बाहुल्य राज्य है जो पर्यावरण संसाधनों से भी संपन्न है जिसका लगभग 21% हिस्सा जनजाति जनसँख्या तथा 25 % हिस्सा वनाच्छादित है जो इसे प्रकृति व जनजाति संस्कृति के बहुमूल्य संरक्षण के रूप में प्रदर्शित करता है । इको – टूरिस्म इन प्राकृतिक संसाधनों तथा जनजाति संस्कृति के संरक्षक तथा इससे जुड़े लोगो के आर्थिक विकास का माध्यम है । यदि मध्य प्रदेश पर्यटको की सुविधाओ का तथा पर्यावरण संरक्षण के साथ - साथ जनजाति संस्कृति का विकास व पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना जाये तो यह अपनी एक वैश्विक पहचान प्राप्त कर सकता है ।

अतः पर्यटक, स्थानीय समुदाय, जनजाति समुदाय तथा सरकार सभी को मिल कर एक ऐसी व्यवस्था तैयार करनी चाहिए, जिससे प्रकृति, संस्कृति, सामुदायिक विकास और आर्थिक विकास के साथ सतत विकास के मध्य संतुलन बना रहे ।

Reference

1. Madhya Pradesh Tourism Board, *Eco Tourism in Madhya Pradesh*, Bhopal, 2022, p. 12.
2. Verrier Elwin, *The Tribal World of Verrier Elwin*, Oxford University Press, New Delhi, 1964, p. 85.
3. Government of India, Ministry of Tourism, *Sustainable Tourism Criteria for India*, New Delhi, 2010, p. 7.
4. UNESCO, *Culture and Sustainable Development Report*, Paris, 2019, p. 24.
5. Ram Dayal Munda, *Tribal Heritage of India*, Concept Publishing Company, New Delhi, 2004, p. 61.
6. World Tourism Organization (UNWTO), *Tourism and Sustainable Development Report*, Madrid, 2019, p. 14.
7. Madhya Pradesh Tourism Board, *Tourism Policy of Madhya Pradesh*, Bhopal, 2022, p. 9.
8. Verrier Elwin, *The Baiga*, John Murray Publication, London, 1939, p. 27.
9. Government of Madhya Pradesh, Tribal Affairs Department, *Tribal Culture and Heritage of Madhya Pradesh*, Bhopal, 2021, p. 18.
10. UNESCO, *Culture, Heritage and Sustainable Tourism*, Paris, 2018, p. 31.
11. Government of Madhya Pradesh, Tribal Affairs Department, *Tribes of Madhya Pradesh*, Bhopal, 2021, p. 11.
12. Verrier Elwin, *The Tribal World of Verrier Elwin*, Oxford University Press, New Delhi, 1964, p. 92.
13. Christoph von Fürer-Haimendorf, *Tribal Population and Culture of India*, New Delhi, 1982, p. 56.
14. Madhya Pradesh Tourism Board, *Cultural Heritage of Madhya Pradesh*, Bhopal, 2020, p. 25.
15. L.P. Vidyarthi and B.K. Rai, *The Tribal Culture of India*, Concept Publishing Company, New Delhi, 1976, p. 74.
16. World Tourism Organization (UNWTO), *Ecotourism and Sustainable Development*, Madrid, 2018, p. 21.
17. Hector Ceballos-Lascuráin, *Tourism, Ecotourism and Protected Areas*, IUCN Publication, Switzerland, 1996, p. 14.
18. Government of India, Ministry of Tourism, *Ecotourism Policy and Guidelines*, New Delhi, 2021, p. 9.
19. Madhya Pradesh Ecotourism Development Board, *Annual Report on Ecotourism*, Bhopal, 2022, p. 17.
20. UNESCO, *Sustainable Tourism and Cultural Heritage*, Paris, 2019, p. 28.